ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 82 बुलेटिन अवधिः 28 अक्टूबर–1 नवम्बर, 2017 दिनःशुक्रवार दिनाँकः 27 अक्टूबर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर**				
	28–10–2017	**29–10–2017**	**30–10–2017**	**31–10–2017**	**01–11–2017**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	29	29	30	30	29
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	13	13	13	12	12
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	50	50	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	006	008	010
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**20 से** 26 **अक्टूबर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में हल्के बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 30.0 से 36.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 13.5 से 18.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 74 से 89 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 28 से 63 प्रतिशत एवं हवा 1.2 से 4.3 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्ष

फसल प्रबन्धः

- इस समय चना, मसूर तथा मटर की बुवाई करें।
- चना की छोटी दाने वाली किस्मों जैसे : पंत जी–114, डी.सी.पी. 92–3, जी.एन.जी. –1581, आधार, जी.एन.जी.–1928; मोटे दाने वाली किस्म पूसा–256 तथा काबुली चना कि किस्म पंत काबुली चना–1 में से एक का चुनाव करें।

- मसूर की उन्नतशील किस्मों जैसे पंत एल–406, पंत एल–639, पंत एल–4,5,7,8,9 डी.पी.एल–15,62। गोल मटर की बौनी प्रजाति– अपर्णा, मालवीय मटर–5, डी.पी.आर. –23, पंत मटर– 13,14,25,74,155,157 एवं सामान्य किस्म– पंत मटर –42 में से चुनाव करें।
- बुवाई हेतु बीज दर – चना हेतु 60–75 कि0ग्रा0/है0, मसूर हेतु 30–40 कि0ग्रा0/है0, बौनी मटर हेतु 100–125 कि0ग्रा0/है0 तथा सामान्य मटर हेतु 75–80 कि0ग्रा0/है0 रखें।
- असिंचित दशा में गेहूँ की बुवाई का उचित समय है अतः माह के अंत तक बुवाई कर लें।
- गेहूँ की उन्नतशील प्रजातियों – सी0– 306, पी0बी0डब्लू0–175, पी0बी0डब्लू0– 299, पी0बी0डब्लू0– 396 तथा पी0बी0डब्लू0– 527 का चुनाव करें। बुवाई के समय 60:30:30 नत्रजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश का प्रति है0 के दर से प्रयोग करे।
- बरसीम की बुवाई शुरू करें तथा बरसीम की उन्नत किस्म – यू0पी0बी0– 110, मस्कावी, पूसा जायन्ट, बरदान का चुनाव करें। बीज दर 25–30 कि0ग्रा0/है0 रखें।
- फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- गेहूँ के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।

उद्यान प्रबन्धः

- खीरा वर्गीय फसलों में लौकी, तोरई, खीरा, करेला आदि के फल तोड़कर बाजार भेजें।
- मटर को तना मक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए कार्बोफ्यूरॉन 3 सी0जी0, 25 कि0ग्रा0/है0 की दर से बुवाई के समय खाद व बीज के साथ जमीन में डालें।
- टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500 मि0ली0/है0 की दर से प्रयोग करें।
- टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से प्रयोग करें।
- किसी भी कीटनाशी रसायन का एक बार से ज्यादा प्रयोग न करें।
- बैंगन में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब का 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- अरबी की फसल में चूसनें वाले कीड़ों की रोकथाम हेतु एमिडाक्लोरपिड + डाईएथीन 45, 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव दस दिन के अंतर से करें।
- वृक्ष में जाला होने की स्थिति में उसकी जाला यंत्र द्वारा सफाई करें तथा क्वीनौलफॉस 2 मि0ली0/लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नही लगें है उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहें।
- खुरपका मुखपका के लक्षण– आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुहँ में छाले होना,लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दषा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करायें तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।
- इस माह में जानवरों में खासकर भैसों में प्रसव दर अधिक बढ़ जाती है इसको ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पष्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- नवजात पशु की नाल को नए ब्लेड से काटकर उसमें गांठ लगा दें तथा उस पर बीटाडीन या टिंचर लगाना न भूलें।
- मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिश हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकितसक की सलाह से दवा दें।

❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर